Date:-19/05 /2020.

Day: - Tuesday, Time: - 10:30 to 11:20.

Class:- B.Ed. session (2019 21) 1st year. Subject: - contemporary India and Education. Paper:-2

Topic (e- content):- प्रयोजनवाद की विशेषताएँ

प्रयोजनवाद की विशेषताएँ

- (१) प्रयोजनवाद 'शाश्वत मूल्यों में विश्वास नहीं करता। प्रयोजनवाद के अतिरिक्त सभी दार्शनिक विचारधारायें सत्य को अपरिवर्तनशील मानती हैं परन्तु प्रयोजनवाद के अनुसार सत्य देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तित होता रहता है। प्रयोजनवादी डीवी केवल 'शिव' में ही विश्वास रखते हैं, 'सत्य' तथा 'सुन्दर' में नहीं। उनके अनुसार जो वस्तु एक स्थान पर सत्य है, यह आवश्यक नहीं है कि वह दूसरे स्थान पर भी सत्य हो। इस प्रकार सत्य सदा परिवर्तनशील है।

- (२) बुद्धि के व्यावहारिक रूप में ही प्रयोजनवाद का विश्वास होने के कारण वे विज्ञान एवं वैज्ञानिक सत्यों पर विश्वास नहीं करते। उनका विश्वास है कि प्रज्ञा वातावरण को परिवर्तित करने में सहायक होती है। इसी कारण 'व्यावहारिक इच्छायें', चेष्टाओंका विकास 'चुनाव द्वारा कार्य' इत्यादि बातें ही उसके लिए उचित है।

- (३) प्रयोजनवाद, बहुतत्त्ववादी विचारधारा का समर्थक एवं पोषक है। इसके अनुसार संसार का निर्माण अनेक तत्वों के योग से हुआ है। इस सम्बन्ध में रस्क महोदय ने लिखा है *प्रकृतिवाद प्रत्येक वस्तु को जीवन अथवा भौतिक तत्व से निर्मित मानता है। आदर्शवाद मन (विचार) अथवा आत्मा से। प्रयोजनवाद किसी एक की आधारभूत सिद्धान्त के आधार पर इसकी व्याख्या की आवश्यकता नहीं समझता है। वह अनेक सिद्धान्त के योगदान को स्वीकार करते हैं। इस प्रकार वह बहुतत्ववादी है।*

- (४) प्रयोजनवाद, आदर्शवाद के विपरीत प्रकृतिवाद के साथ सहयोग करके व्यक्तित्व का संकीर्ण अर्थ बताता है। चूँकि मनुष्य जन्म से ही भिन्न भिन्न स्वभाव तथा व्यक्तित्व वाले होते हैं इसलिए आदर्शवाद के व्यक्तित्व की सार्वभौमिकता पर प्रयोजनवाद का विश्वास नहीं है।

- (५) प्रयोजनवाद 'सत्य' को 'व्यवहार' तथा 'प्रयोजन' की कसौटी पर कसकर तथा परिणाम द्वारा व्यवहार के अच्छे तथा बुरे होने की बात करके वह आदर्शवाद का विरोध करता है तथा तर्क एवं प्रज्ञा के विषय में मनुष्यों तथा पशुओं में साम्य बताकर वह प्रकृतिवादी विचारकों का समर्थन करता है।

- (६) प्रयोजनवाद का शाश्वत मूल्यों (सांस्कृतिक मूल्यों) तथा आदर्शों में भी विश्वास नहीं है। इस विचार में वह प्रकृतिवाद का ही समर्थन करता है।

- (७) प्रयोजनवाद, प्रकृतिवाद के समान ही ज्ञान को हेय तथा बुद्धि को मनस् (माइण्ड) से स्वतंत्र मानते हैं। यद्यपि आदर्शवादी भी मात्र कल्पना में विश्वास नहीं करते हैं।

अतः स्पष्ट है कि प्रयोजनवादी कभी आदर्शवादियों का समर्थन करते हैं तो कभी प्रकृतिवादियों का। इस प्रकार वे अपने को इन दोनों 'वादोंं' के बीच की स्थिति में रखते हैं।

प्रयोजनवाद की आलोचना

प्रयोजनवादी दर्शन 'प्रगति गामी शिक्षा' के आन्दोलन के रूप में प्रस्फुटित हुआ परन्तु आज उसकी सफलता के संबंध में अनेक आशंकायें उठाई जा रही हैं। कारण स्पष्ट है कि प्रयोजनवाद ने अपने अनिश्चित उद्देश्यों से, साधन को साध्य से अधिक महत्व देकर तथा मनुष्य की मूल्यों के क्षेत्र में रचनात्मकता इत्यादि सिद्धान्तों का प्रतिपादन करके अपूर्ण विचारधारा होने का परिचय दिया है। प्रयोजनवादी दर्शन के सम्बन्ध में कुछ विचारणीय बिन्दु इस प्रकार हैं

- (१) कार्य (क्रिया) सदैव विचार से अधिक महत्वशाली नहीं हो सकता। विचार क्रिया से ही उत्पन्न नहीं होता अपितु अनेक बार विचार की परिणति क्रिया में होती है।

- (२) इस दर्शन का आध्यात्मिकता में कोई विश्वास नहीं है। प्रयोजनवादी अनुभव में यथार्थ का अस्तित्व मानता है किन्तु उन व्यक्तियों का मार्ग अवरूद्ध कर देता है जो आध्यात्मिकता को कल्पना की वस्तु न मानकर अनुभव की ही वस्तु मानते हैं और जिन्हें आध्यात्मिकता की अनुभूति बराबर होती रहती है।

- (३) प्रयोजनवाद में एक नकारात्मकता परिलक्षित होती है। स्थापित सिद्धान्तों एवं मूल्यों को इन्कार करने के अलावा प्रयोजनवाद ने और कुछ नहीं किया। नये सिद्धान्त एवं मूल्य स्थापित करने में प्रयोजनवाद असफल रहा।

- (४) प्रयोजनवाद जीवन की सभी समस्याओं के विचार के लिए वैज्ञानिक विधि का उपयोग करता है जबकि दूसरी ओर विज्ञान के अमानुषिक विवेचन की भर्त्सना भी करता है। यह एक विरोधाभास सा दिखाई देता है। इसके अलावा जीवन के भावनात्मक एवं आध्यात्मिक प्रश्नों के विवेचन के लिए अन्य प्रकार की विधि अपेक्षित होगी।

- (५) प्रयोजनवाद ने चिरन्तन मूल्यों की उपेक्षा करके शैक्षिक उद्देश्यों को निम्न स्तर पर लाकर खड़ा कर दिया है। उनके अनुसार शिक्षा का कोई निश्चित उद्देश्य नहीं होता। बिना उद्देश्यों के शिक्षा देने से तो अच्छा यही जान पड़ता है कि शिक्षा दी ही न जाय, क्योंकि सुशिक्षा एवं कुशिक्षा में उद्देश्य के आधार पर ही भेद किया जा सकता है।

- (६) समस्या प्रणाली तथा प्रोजेक्ट प्रणाली से जो ज्ञान प्रदान किया जाता है, वह क्रमबद्ध एवं सुशृंखलित नहीं होता।

(७) कोमल शिक्षा प्रणाली के कारण बालकों को वास्तविक जीवन जीने के लिए तैयार नहीं किया जाता। उन्हें एक कृत्रिम ख्याली दुनियाँ में रखा जाता है।